हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी और भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- 3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 406 **[HIL406]**

पाठ्यक्रम शीर्षक : खड़ी बोली का काव्य: हिन्दी की लम्बी कविताएँ

क्रेडिट : 0**2[** एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रम उद्देश्य : पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिन्दी की लम्बी कविताओं के सौंदर्यशास्त्र से परिचित कराते हुए, उनकी गहन और तीक्ष्ण संवेदना के मर्म तक पहुँचाना है ताकि वे समकालीन जीवन-यथार्थ का मूल्यांकन-विश्लेषण विवेकपूर्ण और वस्तुनिष्ठ ढंग से कर सकें | इन लम्बी कविताओं का महत्त्व प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी अधिक है |

उपस्थिति अनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क.] मध्यावधि-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

* **पुस्तकालय कार्य - 5%**
* **गृह कार्य - 5%**
* **कक्षा परीक्षा - 10%**
* **कक्षा प्रस्तुतियां - 5%**

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- 3

पाठ्यक्रम शीर्षक : *खड़ी बोली का काव्य:हिन्दी की लम्बी कवितायें*

पाठ्यक्रम कोड - HIL406 **क्रेडिट- 2**

<u>पाठ्यक्रम विवरण -</u>

इकाई -1 हिन्दी की लम्बी कविताओं का स्वरूप और विकास

- लम्बी कविताओं का स्वरूप और रचना-विधान
- लम्बी कविताओं का महत्त्व

इकाई -2 निराला

- राम की शक्तिपूजा
- निराला की काव्य-चेतना

इकाई- 3 नागार्जुन और अज्ञेय

- हरिजनगाथा
- नागार्जुन की काव्य-चेतना
- असाध्य वीणा
- अज्ञेय की काव्य-चेतना

इकाई -4 धूमिल

- पटकथा
- धूमिल की काव्य-चेतना

इकाई - 5 मुक्तिबोध

- अँधेरे में
- मुक्तिबोध की काव्य-चेतना

आधार ग्रन्थ -

1. *अनामिका - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला*
2. *चाँद का मुंह टेढ़ा है - गजानन माधव मुक्तिबोध*
3. *आँगन के पार द्वार - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय*
4. *संसद से सड़क तक - सुदामा पांडे धूमिल*
5. *प्रतिनिधि कवितायँ - सं.नामवर सिंह*

सन्दर्भ ग्रन्थ :

6. *मुक्तिबोध: ज्ञान और संवेदना - नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली*
7. *नयी कविता और अस्तित्ववाद - रामविलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली*
8. *अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरूप चतुर्वेदी*
9. *समकालीन कविता का यथार्थ - परमानन्द श्रीवास्तव , हरियाणा ग्रन्थ अकादमी*
10. *निराला की साहित्य साधना - रामविलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली*
11. *क्रन्तिकारी कवि निराला - बच्चन सिंह*
12. *अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरूप चतुर्वेदी*
13. *नागार्जुन का काव्य - अजय तिवारी*
14. *कविता यात्रा - रामस्वरूप चतुर्वेदी*

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 417 (HIL 417) **श्रेय तुल्यमान:** 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: एम.ए स्तर के विद्यार्थियों को भारतीय नाट्य परम्परा से अवगत कराते हुए हिन्दी की नाट्य परम्परा के सूत्रपात से लेकर अद्यतन उसके क्रमिक विकास की विधिवत जानकारी देना है | विद्यार्थियों को हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक नाट्य कृतियों की जानकारी मिल सके,इस हेतु कृतियों का सरल विश्लेषण अपेक्षित है । साथ ही रंगमच,नाट्य भाषा एवं नाट्य प्रयोगों के आलोक में हिन्दी नाटकों की प्रवृत्तियों, परिस्थितियों को विवेचित करना है ।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 417 (HIL 417) **श्रेय तुल्यमान:** 4 श्रेय

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 नाट्य परम्परा : परिचय एवं क्रमिक विकास (8 घंटे)

क) **नाटक : परिभाषा एवं प्रमुख तत्व, नाटक और रंगमच**

ख) संस्कृत नाटकों की परम्परा

ग) हिन्दी नाटकों की परम्परा का विकास

घ) लोक नाट्य परम्परा का विकास

ङ) व्यावसायिक नाटक मंडलियाँ

इकाई-2 भारतेंदु युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

क) भारतेंदुयुगीन सामाजिक परिस्थितियाँ

ख) भारतेंदु के प्रमुख प्रहसन

ग) अन्धेर नगरी की भाषा एवं नाट्य-शिल्प का अध्ययन

घ) समकालीन दौर में 'अन्धेर नगरी' का महत्व

ङ) अन्धेर नगरी : समीक्षा एवं पाठ विवेचन

इकाई-3 प्रसाद युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

क) प्रसाद के नाटक और अभिनेयता

ख) जयशंकर प्रसाद की नाट्य-चेतना

ग) प्रसाद के समसामयिक नाट्यकार

घ) 'स्कन्दगुप्त' की ऐतिहासिकता, संवाद-शैली, गीत-योजना

ङ) 'स्कन्दगुप्त': समीक्षा एवं पाठ विवेचन

इकाई-4 प्रसादोत्तर नाट्य परम्परा (8 घंटे)

क) हिन्दी नाट्य-परम्परा में मोहन राकेश का योगदान

ख) 'लहरों के राजहंस' : ऐतिहासिकता और आधुनिकता का द्वन्द्व, समीक्षा एवं पाठ विवेचन

ग) हानूश : व्यक्ति और सत्ता का द्वंद्व,हानूश : समीक्षा एवं पाठ विवेचन

घ) जगदीश चन्द्र माथुर की नाट्य चेतना, कोणार्क में रोमानियत एवं प्रगतिशीलता का द्वंद्व

ङ) कोणार्क : समीक्षा एवं पाठ-विवेचन

इकाई-5 समकालीन हिन्दी नाटक : परिप्रेक्ष्य एवं संभावनाएं (8 घंटे)

क) समकालीन हिन्दी नाटक : प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

ख) पश्चिमी नाटकों का प्रदर्शन

ग) नुक्कड़ नाटक का स्वरूप

घ) रंगमंच: दलित पात्र, स्त्री छवियाँ

ङ) बाल रंगमंच : स्थिति और संभावनाएं

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

1. ओम प्रकाश सिंह (सम्पादन) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रंथावली भाग-1,प्रकाशन संस्थान,दरिया गंज नई दिल्ली- 110002
2. जयशंकर प्रसाद प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी,नार्थ इण्डिया पब्लिशर्स, सोनिया विहार,दिल्ली- 110094
3. भीष्म साहनी हानूश,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002
4. मोहन राकेश लहरों के राजहंस,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002
5. जगदीश चन्द्र माथुर कोणार्क, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

6. डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल (सम्पादन) हिन्दी नाट्य परिदृश्य,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली- 110002
7. बच्चन सिंह हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,आवृत्ति :2011
8. गिरीश रस्तोगी भारतेन्दु और अँधेर नगरी,अभिव्यक्ति प्रकाशन,विश्वविद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
9. रेवती रमण प्रसाद और स्कन्दगुप्त, अभिव्यक्ति प्रकाशन,विश्वविद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
10. गिरीश रस्तोगी हिन्दी नाटक और रंगमच : नयी दिशाएँ, नये प्रश्न, अभिव्यक्ति प्रकाशन, विश्वविद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
11. कृष्णानंद तिवारी नाटककार मोहन राकेश,प्रिय साहित्य सदन,दिल्ली- 110094
12. नेमिचंद्र जैन रंग दर्शन,राधा कृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,तीसरी आवृत्ति : 2010

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
PO BOX: 21, DHARAMSHALA, DISTRICT KANGRA – 176215
मानविकी और भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी) सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 442[HIL442]

पाठ्यक्रम शीर्षक : पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

क्रेडिट : 4 **[** एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रमउद्देश्य : पाठ्यक्रमकाउद्देश्य पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांत की व्यापक परंपरा से छात्रों को परिचित कराना है, ताकि वे इन साहित्य सिद्धांतों से न केवल परिचित हों बल्कि उसके संग्रहणीय तत्त्वों से लाभान्वित हों तथा वर्तमान में साहित्य के मूल्यांकन की विवेकपूर्ण आलोचकीय दृष्टि उनमें विकसित हो सके |

उपस्थितिअनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है |न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क.] मध्यावधि-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*** पुस्तकालय कार्य - 5%**

*** गृह कार्य - 5%**

*** कक्षा परीक्षा - 10%**

*** कक्षा प्रस्तुतियां - 5%**

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

सेमेस्टर- 3, एम.ए.(हिन्दी)

कोर्स कोड - HIL 442 क्रेडिट–4

पाठ्यक्रम शीर्षक : पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

<u>पाठ्यक्रम विवरण -</u>

इकाई -1पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत: एक परिचय

- पश्चिम में साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन परम्परा का ऐतिहासिक विकास

इकई -2 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत -1

- प्लेटो -प्रत्यय सिद्धांत,अनुकृति, काव्य पर आरोप
- अरस्तु -अनुकृति, विरेचन सिद्धांत
- लोंजाइनस- काव्य में उदात्त की अवधारणा

इकाई-3 पाश्चात्यसाहित्य सिद्धांत -2

- वर्ड्सवर्थ- काव्य भाषा सिद्धांत
- कोलरिज- कल्पना सिद्धांत
- क्रोचे- अभिव्यंजनावाद

इकाई- 4 पाश्चात्यसाहित्य सिद्धांत -3

- टी.एस.एलियट- परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता
- आई.ए.रिचर्ड्स - मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत

इकाई- 5 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत -4

- शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद,
- नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, विखंडनवाद,
- साहित्यिक शैली विज्ञान,उत्तर आधुनिकताइत्यादि

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. पाश्चात्यसाहित्य चिंतन : निर्मला जैन
3. संरचनावाद,उत्तर संरचनावाद और प्राच्य काव्य शास्त्र : गोपी चंद नारंग
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ. तारखनाथ बाली
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा : डॉ.रामचंद्र तिवारी
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत : डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- इतिहास, सिद्धांत और वाद : डॉ,भागीरथ मिश्र
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- अधुनातन सन्दर्भ : सत्यदेव मिश्र

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - रीतिकाव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 447 (HIL 447) **श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय** (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: रीतिकालीन काव्य-परम्परा के विषय में एम. ए के विद्यार्थियों को समुचित जानकारी देना है,जिससे कि वे रीतिकालीन सन्दर्भों और तद्युगीन साहियिक परिस्थितियों की सही समझ ग्रहण कर सकें | आमतौर पर रीतिकाल को सामन्तवादी काल कहकर खारिज करने की मंशा साहित्यिक हलकों में देखी जाती है,या फिर भोगवादी काल कहकर समकालीन आलोचना-विमर्श से बाहर रखने की कवायद देखी जाती है । पाठ्यक्रम का उद्देश्य रीतिकालीन साहित्य की विवेचना करते हुए समकालीन समय में उसे सही तौर पर व्याख्यायित करना है,जिससे कि विद्यार्थी उसे हृदयंगम कर सकें और अपनी साहित्यिक दृष्टि का विकास कर सकें ।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - रीतिकाव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 447 (HIL 447) **श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय**

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 रीतिकालीन हिन्दी काव्य : नामकरण एवं स्थितियाँ **(4 घंटे)**

क) रीति का अर्थ एवं स्वरूप,रीति सम्प्रदाय

ख) रीतिकालीन हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ग) हिंदी रीति काव्य के नामकरण का आधार

घ) रीतिकालीन परिस्थितियाँ : सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक

इकाई-2 रीति-पूर्व हिन्दी रीति काव्य **(4 घंटे)**

क) भक्तिकालीन प्रमुख रीति कवि

ख) रहीम का रचना संसार एवं युगीन सन्दर्भ

इकाई-3 रीति काव्य-परम्परा : 1 **(4 घंटे)**

क) रीतिबद्ध कविता : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

ख) भूषण का काव्य : राष्ट्रीयता, काव्यानुभूति,काव्य भाषा

ग) पाठ विवेचन : ('शिवा बावनी', सन्दर्भ - भूषण-ग्रन्थावली)

इकाई-4 रीति काव्य-परम्परा : 2 **(4 घंटे)**

क) रीति सिद्ध कविता : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

ख) बिहारी का रचना-संसार,बिहारी की समाहार शक्ति

ग) पाठ विवेचन : (सन्दर्भ - बिहारी-रत्नाकर,दोहा संख्या- 1,13,18,20,,25,32,34,35 38,52, 60,75,80,121,140,141,154,159,167,191,200)

इकाई-5 रीति काव्य-परम्परा: 3 **(4 घंटे)**

क) रीतिमुक्त कविता : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

ख) घनानन्द का रचना-संसार, घनानंद की विरहानुभूति

ग) पाठ विवेचन (सन्दर्भ - घनानन्द-कवित्त, कवित्त संख्या 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,)

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

1. डॉ. सत्य प्रकाश मिश्र (सम्पादन) रहीम रचनावली', लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,द्वितीय संस्करण :2002
2. डॉ. विजयपाल सिंह 'भूषण-ग्रन्थावली',जय भारती प्रकाशन,इलाहाबाद. संस्करण 2007
3. सुधाकर पाण्डेय (संपादन) 'रसलीन-ग्रन्थावली',नागरीप्रचारिणी सभा,काशी
4. जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपादन) बिहारी-रत्नाकर
5. भगीरथ मिश्र हिन्दी रीति साहित्य (घनानन्द) ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002
7. डॉ. बच्चन सिंह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002
8. डॉ. नगेन्द्र रीतिकाव्य की भूमिका,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002
9. भवदेव पाण्डेय आलम, साहित्य अकादेमी,रवीन्द्र भवन,फ़ीरोज़शाह मार्ग,नई दिल्ली-110 002
10. सत्यदेव त्रिपाठी मध्यकालीन कविता के सामाजिक सरोकार, शिल्पायन,शाहदरा,दिल्ली-110032

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - विमर्श विश्लेषण

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503) **श्रेय तुल्यमान:** 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: एम.ए स्तर के विद्यार्थियों को समकालीन विमर्श की जानकारी देना है ताकि वे अस्मिता के लिए संघर्षरत तबकों की वस्तुस्थिति जान सकें | साथ ही समाज को बदलने में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह कर सकें |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - विमर्श विश्लेषण

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503) **श्रेय तुल्यमान:** 4 श्रेय

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 विमर्श की अवधारणा (8 घंटे)

क) विमर्श का अर्थ एवं स्वरूप

ख) साहित्य में विमर्श

ग) समकालीन सन्दर्भ में विमर्श की प्रासंगिकता

इकाई-2 दलित विमर्श (8 घंटे)

क) दलित विमर्श : अर्थ एवं स्वरूप

ख) कविता,कहानी,नाटक,आत्मकथा आदि में दलित विमर्श

ग) विशेष साहित्यकार का अध्ययन - तुलसी राम (आत्मकथा- मुर्दहिया),
ओमप्रकाश वाल्मीकि (कहानी संग्रह - सलाम)

इकाई-3 स्त्री विमर्श (8 घंटे)

क) स्त्री विमर्श की अवधारणा

ख) कविता,कहानी,नाटक,आत्मकथा आदि में स्त्री विमर्श

ग) विशेष साहित्यकार का अध्ययन - मैत्रेयी पुष्पा (अल्मा कबूतरी)

इकाई-4 आदिवासी विमर्श (8 घंटे)

क) आदिवासी विमर्श की अवधारणा, आदिवासी लोक एवं संस्कृति

ख) हिन्दी कविता एवं कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श

ग) विशेष साहित्यकार का अध्ययन : महादेव टोप्पो (कविता संग्रह - जंगल पहाड़ के पाठ)
रणेंद्र (उपन्यास- ग्लोबल गाँव के देवता)

इकाई-5 तृतीय लिंगी विमर्श (थर्ड जेंडर) (8 घंटे)

क) तृतीय लिंगी विमर्श की अवधारणा

ख) कथा साहित्य,आत्मकथा,सिनेमा आदि में तृतीय लिंगी विमर्श

ग) विशेष साहित्यकार का अध्ययन : महेंद्र भीष्म (उपन्यास - किन्नर कथा)

आधार ग्रन्थ :

तुलसी राम	मुर्दहिया
ओमप्रकाश वाल्मीकि	सलाम
मैत्रेयी पुष्पा	अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2000
महादेव टोप्पो	जंगल पहाड़ के पाठ, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली
रणेंद्र	ग्लोबल गाँव के देवता
महेंद्र भीष्म	किन्नर कथा, सामयिक प्रकाशन,दिल्ली

संदर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
2. प्रो. श्रीराम शर्मा (संपादन) समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
3. कँवल भारती दलित कविता का संघर्ष,अमन प्रकाशन,कानपुर नगर- 208012 उ.प्र.
4. डॉ. संजय नवले हिन्दी दलित आत्मकथा, अमन प्रकाशन,कानपुर नगर- 208012 उ.प्र.
5. सुमन राजे इतिहास में स्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ,18,इन्स्टीट्यूशनल एरिया,लोदी रोड,नई दिल्ली-110032
6. क्षमा शर्मा स्त्रीत्ववादी विमर्श, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली -110032
7. जगदीश्वर चतुर्वेदी स्त्री साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,दिल्ली
8. विजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) वंचित संवेदना का साहित्य खंड-3 आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली
9. योगेश अटल आदिवासी भारत,रावत पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली
10. रमणिका गुप्ता (सम्पादन) आदिवासी लोक, शिल्पायन प्रकाशन,दिल्ली 110032
11. डॉ. राम रतन प्रसाद आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति, अनंग प्रकाशन,दिल्ली
12. विजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) विमर्श का तीसरा पक्ष (थर्ड जेंडर), अनंग प्रकाशन दिल्ली
13. विजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) हिन्दी साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगीय विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर
14. विजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) हिन्दी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर ,अमन प्रकाशन, कानपुर
15. विजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादित कहानियाँ) कथा और किन्नर, अमन प्रकाशन, कानपुर

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए. (हिंदी),तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत:.एच.आई.एल. (HIL 422)

पाठ्यक्रम शीर्षक- लोक साहित्य **श्रेय तुल्यमान:** 4

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को हिंदी लोक साहित्य से परिचित कराना है | लोक गीत के प्रारम्भ में मौजूद विभिन्न चिन्ताधाराओं के विषय में जानकारी प्रदान करना है, जिससे कि लोक समझ के साथ ही हिंदी लोक गीत का ज्ञान विकसित किया जा सके | जिससे कि लोक साहित्य के उद्गम, इतिहास और उसकी गौरवशाली परम्परा से एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी) के विद्यार्थियों को परिचित कराया जा सके |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मानविकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए. (हिंदी),तृतीय सेमेस्टर
पाठ्यक्रम कूट-संकेत:.एच.आई.एल. (HIL 422)

पाठ्यक्रम शीर्षक- लोक साहित्य **श्रेय तुल्यमान:** 4

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 लोक साहित्य और उसका विकास **(8 घंटे)**

क) लोक साहित्य : अभिप्राय एवं परिभाषा
ख) लोक की संरचना
ग) लोक साहित्य के विभिन्न रूप
घ) लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग
ङ) लोक साहित्य और हिंदी साहित्य का अन्तः संबंध
च) हिंदी साहित्य के विकास में लोक साहित्य का योगदान

इकाई-2 आदिकालीन लोक साहित्य **(8 घंटे)**

क) आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय
ख) आदिकालीन लोक गाथा
ग) आदिकाल में लोक साहित्य : प्रमुख कवि
घ) आदिकाल में लोक साहित्य की विशेषताएं
ङ) पाठ विवेचन : अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पिया घर आए)

इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और विशेषताएँ **(8 घंटे)**

क) लोक साहित्य और लोक संस्कृति
ख) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना
ग) लोक साहित्य और विमर्श
घ) लोक साहित्य का महत्त्व एवं विशेषताएँ
ङ) पाठ विवेचन : आद्या प्रसाद उन्मत्त (अवधी लोक गीत 'पाती')

इकाई-4 लोक साहित्य की विभिन्न विधाएँ **(8 घंटे)**

क) लोक गीत और ग्राम गीत
ख) लोक गीत : एक परिचय
ग) लोक गीतों में मातृभूमि प्रेम
घ) लोक से सम्बंधित ऋतु गीत
ङ) लोक से सम्बंधित संस्कार गीत
च) लोक से सम्बंधित देवी-देवताओं के गीत

छ) लोक से सम्बंधित जाति-गीत
ज) लोक से सम्बंधित श्रम-गीत

इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभाषित (8 घंटे)

क) लोक नाट्य : एक परिचय
ख) नौटंकी : एक परिचय
ग) नकटा : एक परिचय
घ) लोक सुभाषित : एक परिचय
ङ) लोक से सम्बंधित लोकोक्ति
च) लोक से सम्बंधित मुहावरे

संभावित ग्रन्थ –

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. लोक साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
2. भारत में लोक साहित्य : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. भारत की लोक कथाएँ : सं. ए. के. रामानुजन, नॅशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
4. खड़ी बोली का लोक साहित्य : डॉ. सव्यरानी, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
5. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
6. लोक धारा : हीरामणि सिंह 'साथी', अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7. जनपदीय भाषा साहित्य(अवधी काव्य): डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित (सं.),प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
8. भारतीय लोक-साहित्य - श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. लोक साहित्य : एक निरूपण - रामचंद्र बोड़ा, एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर
11. लोक साहित्य के प्रतिमान - डॉ. कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़
12. आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति - डॉ. राम रतन प्रसाद, अनंग प्रकाशन,दिल्ली
13. लोक काव्य के क्षितिज - डॉ. हरिसिंह पाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
14. अमीर खुसरो और उनका साहित्य - डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
15. लोक साहित्य विमर्श - डॉ. स्वर्णलता, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर
16. लोकगीत की सत्ता - डॉ. सुरेश गौतम, शब्द सेतु प्रकाशक, दिल्ली
17. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, साहित्य सदन, कानपुर
18. लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन -श्रीरामशर्मा, निर्मलपब्लिकेशन, दिल्ली
19. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा - डॉ. मनोहरशर्मा, रोशनलालजैन एंड संस, जयपुर
20. लोक साहित्य की रूपरेखा - डॉ. कृष्णचन्द्र शर्मा (सं.), अमित प्रकाशन, गाजियाबाद

<u>व्याख्यान योजना</u>-

पाठ्यक्रम कूट संकेत – एच.आई.एल 442 (HIL 442) **क्रेडिट-** 4

पाठ्यक्रम शीर्षक – लोक साहित्य

व्याख्यान संख्या	व्याख्यान विषय	सम्भावित स्रोत
1-4	**इकाई-1 लोक साहित्य और उसका विकास** क) लोक साहित्य : अभिप्राय एवं परिभाषा ख) लोक की संरचना ग) लोक साहित्य के विभिन्न रूप घ) लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग	**पाठ्यपुस्तक** **1,2,3,4,5,8,9,10,11**
5-6	च) लोक साहित्य और हिंदी साहित्य का अन्तः संबंध छ)हिंदी साहित्य के विकास में लोक साहित्य का योगदान	**पाठ्यपुस्तक** 6,13
7-9	**इकाई-2 आदिकालीन लोक साहित्य** क)आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय ख) आदिकालीन लोक गाथा ग) आदिकाल में लोक साहित्य : प्रमुख कवि	**पाठ्यपुस्तक** 6,13
10-11	घ) आदिकाल में लोक साहित्य की विशेषताएं ड़) पाठ विवेचन : अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पिया घर आए) पाठ विवेचन : अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पिया घर आए)	**पाठ्यपुस्तक** 13,14
12-14	**इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और विशेषताएँ** क) लोक साहित्य और लोक संस्कृति ख) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना ग) लोक साहित्य और विमर्श	**पाठ्यपुस्तक** 9,10,11,12,13,15,14,17
15-16	घ) लोक साहित्य का महत्त्व एवं विशेषताएँ ड़) पाठ विवेचन : आद्या प्रसाद उन्मत्त(अवधी लोक गीत 'पाती')	**पाठ्यपुस्तक** 15,18,19,20,7
17-20	**इकाई-4 लोक साहित्य की विभिन्न विधाएँ**	**पाठ्यपुस्तक**

	क) लोक गीत और ग्राम गीत ख) लोक गीत : एक परिचय ग) लोक गीतों में मातृभूमि प्रेम घ) लोक से सम्बंधित ऋतु गीत	**13,16,19,6,4,2**
21-24	ड़) लोक से सम्बंधित संस्कार गीत च) लोक से सम्बंधित देवी-देवताओं के गीत छ) लोक से सम्बंधित जाति-गीत ज) लोक से सम्बंधित श्रम-गीत	**पाठ्यपुस्तक** **13,16,19,6,4,2,1**
25-27	**इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभाषित** क) लोक नाट्य : एक परिचय ख) नौटंकी : एक परिचय ग) नकटा : एक परिचय	**पाठ्यपुस्तक** **13,16,19,6,4,2,1,** **2,3,4,5,6,7**
28-30	घ) लोक सुभाषित : एक परिचय ड़) लोक से सम्बंधित लोकोक्ति च) लोक से सम्बंधित मुहावरा	**पाठ्यपुस्तक** **13,16,19,6,4,2,1,** **2,3,4,5,6,**

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

सेमेस्टर-1, ह्यूमन मेकिंग कोर्स

पाठ्यक्रम कूट संकेत - 450 (HIL 450)

mÉÉPèrÉ¢üqÉ zÉÏwÉïMü- हिन्दी का लोकप्रिय साहित्य **श्रेय तुल्यमान:** 2

श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य से परिचित कराना है | जिन विद्यार्थियों की अभिरुचि हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य में है,उन्हें हिन्दी की लोकप्रिय कहानियों,उपन्यासों एवं मंचीय कविता की समृद्ध परम्परा से वाकिफ कराना इस 'यूनिवर्सिटी वाईड' पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावधि परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायोगिक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 लोकप्रिय साहित्य : अवधारणा एवं विकास (4 घंटे)

क) लोक का अर्थ एवं स्वरूप,शास्त्र एवं लोक में अंतर

ख) लोक साहित्य की अवधारणा,लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति

ग) हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य का विकास

इकाई-2 हिन्दी का प्रारंभिक लोकप्रिय साहित्य (4 घंटे)

क) देवकीनंदन खत्री कृत चन्द्रकान्ता का आलोचनात्मक अध्ययन
(सन्दर्भ- पहला अध्याय)

ख) गोपाल राम गहमरी की कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

ग) प्रेमचंद की कफन कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई-3 हिन्दी का उत्तरोत्तर लोकप्रिय कथा साहित्य (4 घंटे)

क) इब्ने सफी के उपन्यास का अध्ययन

ख) वेदप्रकाश शर्मा के उपन्यास का अध्ययन

ग) धर्मवीर भारती के उपन्यास का अध्ययन

इकाई-4 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय गीतकार एवं उनके गीत (3 घंटे)

क) हरिवंशराय 'बच्चन'

ख) गोपाल सिंह 'नेपाली'

ग) गोपालदास 'नीरज'

इकाई-5 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय ग़ज़लकार एवं उनकी ग़ज़लें (5 घंटे)

क) शमशेर बहादुर सिंह

ख) दुष्यंत कुमार

ग) गोपालदास 'नीरज'

घ) कुँअर बेचैन

आधार ग्रन्थ :

1 .डा. विष्णु सक्सेना (संपादन) लोकप्रियता के शिखर गीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई-दिल्ली,पहला संस्करण: 2013

2. डॉ. सुरेश कुमार जैन (संपादन) काव्य कल्पद्रुम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002 संस्करण:2008,2009

3.रंजना अरगड़े (सम्पादन) सुकून की तलाश

4.दुष्यंत कुमार 'साये में धूप',

5.गोपालदास 'नीरज' 'नीरज की पाती'

6.कुँअर बेचैन शामयाने कांच के

सन्दर्भ ग्रन्थ :

10. डॉ.सी. वसंता गीतकार नीरज,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

11.डा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (संपादन) बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य,भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली

12. डॉ. नरेश हिन्दी ग़ज़ल : दशा और दिशा,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002